29/5/20

क्रमशः —

B.A. Part I Hons (1)
Hindi
Paper - I
मध्यकालीन हिंदी काव्य

डॉ० अरविन्द कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

बिहारी के दोहे में भगवान श्रीकृष्ण — क्रमशः —

इनकी भक्ति राधा और कृष्ण को समर्पित है। बिहारी की आराध्या देवी राधा है। उनके प्रति कवि ने अगाध श्रद्धा प्रकट की है —

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परै श्याम हरित दुति होय।

सीस मुकुट कटि काछनी तथा हाथों में मुरली वाले कृष्ण रूप बिहारी को बहुत प्रिय है। कृष्ण के इस रूप को इन्होंने अपने हृदय में बसा लिया है —

सीस मुकुट कटि काछनी
कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मो मन बसौ
सदा बिहारीलाल॥

बिहारी को अपने आराध्य के प्रति अगाध विश्वास है। इनका मानना है कि भगवान के चरणों की प्राप्ति तभी हो सकती है जब भक्त दृढ़ विश्वास से भगवान का हो जाये। तो वे अपने कृष्ण के टेढ़े खड़े होने पर इतना आग्रह है कि अपने हृदय को भी सरल नहीं बनाना चाहते। उन्हें चिंता है कि मुरली बजाने वाला कृष्ण भगवान तीन अंगों से टेढ़ा होकर मेरे हृदय में खड़ा ही न हो सके। संसार के निंदा की चिंता मुझे नहीं —

करौं कुबत जग कुटिलता
तजौं न दीनदयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय
बसत त्रिभंगीलाल॥

बिहारी वस्तुतः शृंगार के कवि हैं। बिहारी के दोहों में प्रेम और सौन्दर्य का अगाध सागर

क्रमशः —

बिहारी B.A. I भाग क्रमशः -

(2) 29/5/20

महत्व रहा है। उनके रूप वर्णन, हाव-भाव के चित्रण तथा मादक एवं उद्दीपन प्रभावशाली की मधुर अनुभूति मन को आह्लादित कर देती है। ये चित्रण केवल काल्पनिक न होकर जीवन के यथार्थ रूप हैं। श्रृंगार के संयोग पक्ष के चित्रण में वे सिद्धहस्त हैं। आंतरिक भावना से प्रेरित होकर शारीरिक चेष्टाओं तथा विभिन्न कार्यकलाप का चित्रण बिहारी इस प्रकार करते हैं कि वह मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाता है।

बिहारी में कल्पना की समाहार शक्ति तथा भाषा की समास शक्ति बेजोड़ है। बिहारी रति-क्रीड़ा का वर्णन करते हैं। नायक रति क्रीड़ा का निवेदन करता है। नायिका नकार जाती है। नायक मोहित होता है नायिका लज्जित जाती है। फिर दोनों मौन कर लेते हैं, प्रसन्न होते हैं और भवन में ही नैनों से बात कर लेते हैं —

कहत नटत, रीझत, खिझत,
मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं
नैनन ही सौं बात।

हाव-भाव का अंकन करते हुए बिहारी कहते हैं —

छुटी न सिसुता की झलक
झलक्यौ जोबन अंग।
दीपति देह दुहून मिलि,
दिपति ताफता रंग॥

इन छोटे-छोटे दोहों में बिहारी ने अनेकानेक भावों को एक साथ उपस्थित कर 'गागर में सागर' भरने की उक्ति चरितार्थ की है। भावों के उद्दीपन के लिए भाषा भी यहाँ समास रूप से सहायक सिद्ध हुई है। मुक्तक तो गुलदस्ता है, इसमें चुने हुए रंग-बिरंगे, चटकीले [illegible] तथा आकर्षक फूलों को संजोना पड़ता है। कवि के इन कणों में आशातीत सौन्दर्य मिले हैं। भाषा का इतना बड़ा और सुन्दर भंडार अन्यत्र नहीं मिलता।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बिहारी के दोहे में भक्ति, नीति एवं श्रृंगार की त्रिवेणी प्रवाहित होती है तथा भावों की सघनता तथा तथ्यों की गहनता के आलोक में इसमें सागर को गागर में भरा है।